सत्ताधारी दल को ही दोबारा सत्ता

पश्चिम बंगाल में बीजेपी के आक्रामक कैंपेन और ध्रुवीकरण की कोशिशों के बावजूद ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस ने शानदार जीत दर्ज की। असम में एनआरसी से जुड़े विवादों के बावजूद बीजेपी को जनता ने लगातार दूसरी बार चुना और कांग्रेस को फिर से मायूसी हाथ लगी।

ममता शर्मा।।

कोरोना की दूसरी लहर के बीच हुए पश्चिम बंगाल, असम, केरल, तमिलनाडु और पुडुचेरी विधानसभा चुनावों के दौरान भले परिवर्तन शब्द पर सबसे ज्यादा जोर दिख रहा हो, वोटरों ने पांच में से तीन जगह सत्ताधारी दल को ही दोबारा सत्ता सौंपी। पश्चिम बंगाल में बीजेपी के आक्रामक कैंपेन और ध्रुवीकरण की कोशिशों के बावजूद ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस ने शानदार जीत दर्ज की। असम में एनआरसी से जुड़े विवादों के बावजूद बीजेपी को जनता ने लगातार दूसरी बार चुना और कांग्रेस को फिर से मायूसी हाथ लगी। तमिलनाडु में डीएमकेएफी जीत हुई, लेकिन सीटों की संख्या उसकी उम्मीद से कम रही। एम करुणानिधि के निधन के बाद स्टालिन के नेतृत्व में यह पार्टी का पहला विधानसभा चुनाव था, जिसमें वह सफल रहे। केरल में एक बार एलडीएफ और दूसरी बार यूडीएफ की रीत को बदलते हुए पिनरई विजयन सरकार ने पहले से ज्यादा सीटों के साथ सत्ता में वापसी की। यह ऐतिहासिक रिजल्ट है। इससे पता चलता है कि विजयन सरकार के कामकाज को जनता ने पसंद किया है, लेकिन पश्चिम बंगाल में लेफ्ट पार्टियों का सफाया हो गया। क्या बंगाल में सीपीएम को केरल में पार्टी के कामकाज के तरीकों से कुछ सीखना चाहिए? यह सवाल गौरतलब है।

बहरहाल, इन चुनावी नतीजों का सबसे गंभीर पहलू यह है कि पश्चिम बंगाल के नतीजों से जो नैरेटिव बन रहा है, उसका असर आने वाले दिनों में राष्ट्रीय राजनीति के दोनों खेमों में देखने को मिल सकता है। बीजेपी ने पश्चिम बंगाल में अपनी जीत पर जिस तरह का दांव लगा रखा था, उससे साफ था कि उसके निशाने पर सिर्फ पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव नहीं था। इसके जरिए वह 2024 के लोकसभा चुनाव का ट्रेंड सेट करना चाहती थी। उसके राज्य में दो अंकों में सिमटने के बाद यह फायदा बीजेपी के बजाय विपक्षी खेमे को मिलने वाला है। जिस तरह से अखिलेश यादव और शरद पवार से लेकर महबूबा मुफ्ती और उमर अब्दुल्ला तक तमाम विपक्षी नेता ममता को बधाई देने आगे आए हैं, उससे यह सष्ट है कि इस जीत में वे सब किसी न किसी रूप में अपनी जीत भी देख रहे हैं। इसी संदर्भ में महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि कांग्रेस किसी भी राज्य में विरोधियों के सामने मजबूत चुनौती तक पेश नहीं कर सकी। कुल मिलाकर इन चुनाव नतीजों ने विपक्षी खेमे में ममता का कद ऊंचा किया है तो कांग्रेस की हैसियत कम की है। इसका विपक्षी पार्टियों के आपसी समीकरण और गठबंधन की शक्ल पर ठीक–ठीक क्या और कैसा प्रभाव पड़ने वाला है, यह साफ होने में थोड़ा वक्त लगेगा। लेकिन इतना तय है कि इन चुनावों ने कांग्रेस और बीजेपी दोनों के नेतृत्व को मंथन के लिए बहुत कुछ दे दिया है।

भगवान पर मुक्का

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

देवी की बात सुनकर विष्णु भगवान मधु–कैटभ के साथ युद्ध करने के लिए तत्पर हो गए। जैसे ही भगवान विष्णु ने उन पर मुक्के से प्रहार किया उन्होंने भी विष्णु भगवान पर मुक्का चलाया। उस समय भगवान ने अत्यन्त दीन दृष्टि से देवी को देखा। वह दृष्टि ऐसी थी मानों विष्णु देव कह रहे हों, ''मेरी लाज अब आपके हवाले है, अब जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में।'' इस तत्व को श्रद्धा–विश्ध्वास कहा गया है। कर्मयोगी के पास यही दो आयुध है। विष्णु भगवान की कातर प्रार्थना सुनकर देवी ने उन दोनों असुरों की ओर मुस्कुरा कर देखा और वे मोहित हो गए । उस क्षण विष्णु भगवान देवी की माया समझ कर कहते हैं कि ''मैं तुम्हारी वीरता से प्रसन्न हूं। वर मांगो।''

संपादकीय

वैक्सीन को लेकर झिझक

अगर हम मान लें कि सरकार देश में दिसंबर 21 तक 200 करोड़ टीके उपलब्ध कराने में सफल हो जाती है, तब भी क्या 18 साल से ऊपर की सारी आबादी को टीका लग पाएगा? यह सवाल इसलिए उठ रहा है कि शुरुआती महीनों में केंद्र ने राज्यों के माध्यम से टीके मुफ्त में या 250 रुपये में उपलब्ध करवाए। अब केंद्र सबकुछ राज्य सरकारों पर छोड़ रहा है। राज्यों और निजी अस्पतालों को बाजार भाव पर टीका खरीदना होगा। जैसा कि हम जानते हैं, कुछ निजी अस्पतालों में टीकों की कीमत 1 हजार से भी ज्यादा ली जा रही है। ऐसे में देश की बड़ी आबादी मुफ्त टीकों पर ही निर्भर करेगी। लेकिन क्या सभी राज्य सरकारें मुफ्त में टीके लगाएंगी? कुछ सरकारों ने चुनाव से पहले मुफ्त टीकाकरण का वादा किया था, लेकिन तब अंदाजा था कि ये टीके केंद्र से मुफ्त में या 150 रुपये की दर पर मिलेंगे। अब जब उन्हें बाजार दर पर टीके खरीदने हैं तो वे अपने वादे पर अमल करते हुए महंगे टीके खरीदेंगी या हर्ड इम्यूनिटी आने और कोरोना संक्रमण के खत्म होने की प्रतीक्षा करेंगी (ताकि टीके लगाने की जरूरत ही न रहे), कहा नहीं जा सकता। यही कारण है कि सुप्रीम कोर्ट ने भारत सरकार की इस वैक्सीन नीति और टीकों की दोहरी कीमत पर सवाल उठाया है। उम्मीद है, इससे टीकाकरण अभियान में आई अनिश्चितता समाप्त होगी।

सभी देश, खासकर अमीर–विकसित देश और अन्य बहुपक्षीय एर्जेसियां तुरंत 50 अरब डॉलर जुटाने और उसे व्यापक टीकाकरण, टेस्टिंग, निगरानी और इलाज पर खर्च करने के लिए तैयार हों तो महामारी को काबू में किया जा सकता है।

मुश्किल है लक्ष्य

नीरेंद्र नागर।।

केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट से कहा है कि दिसंबर 2021 तक 18 साल से ऊपर की सारी आबादी (करीब 104 करोड़) को दोनों टीके लग चुके होंगे और एक तरह से भारत कोरोना के भय से मुक्त हो चुका होगा। अधिकतर विशेषज्ञों का कहना है कि इसमें कम–से–कम एक साल और अधिक–से–अधिक तीन साल का समय लग सकता है। आइए, समझते हैं कि वे ऐसा क्यों कह रहे हैं। देश में कोविशील्ड और कोवैक्सीन नाम के दो टीके अभी लगाए जा रहे हैं, जिनका उत्पादन पिछले साल के अंत में शुरू हो गया था और इस साल जनवरी से उन्हें लगाए जाने का काम शुरू हुआ। इस साल 16 जनवरी से 31 मई के बीच के साढ़े चार महीनों में करीब 22 करोड़ टीके लग चुके हैं। मगर हम जानते हैं कि इन दोनों टीकों की दो खुराकें लगनी जरूरी हैं। उस हिसाब से केवल 4 करोड़ लोग ऐसे हैं, जिन्हें दोनों टीके लगे हैं।

तो अगले सात महीनों में 100 करोड़ लोगों को दोनों टीके (यानी 200 करोड़ टीके) कैसे लग सकते हैं? इसके लिए हर महीने 28 करोड़ टीके लगने चाहिए, जबकि मई में करीब 6 करोड़ टीके ही लग पाए। 6 करोड़ प्रति महीने से 28 करोड़ प्रति महीने का आंकड़ा तभी छुआ जा सकता है जबकि ये कंपनियां उत्पादन बहुत

तेजी से बढ़ाएं। आइए देखते हैं कि सरकार को दिसंबर 21 तक कौन–सी वैक्सीन कितनी मात्रा में मिलने की उम्मीद है।

पहले कोविशील्ड पर आते हैं। अब तक का 90 प्रतिशत टीकाकरण इसी से हुआ है। यानी 22 करोड़ में से 20 करोड़ टीके कोविशील्ड के ही लगे हैं। अगर इसमें वे 6 करोड़ टीके भी जोड़ दें जो निर्यात किए गए तो जिस कंपनी ने पिछले आठ महीने में 26 करोड़ टीके बनाए, वह क्या अगले सात महीने में उसका तीन गुना यानी 75 करोड़ टीके बना सकती है? कोविशील्ड बनाने वाली सीरम इंस्टिट्यूट के दावे पर विश्वास करें तो जवाब है हां। अभी पिछले दिनों कंपनी ने भारत सरकार को चिट्ठी लिखी है कि वह इस महीने यानी जून में 10 करोड़ टीके सप्लाई करने की स्थिति में है। अगर वह वाकई ऐसा कर सकती है तो हमें भरोसा करना होगा कि वह बाकी के छह महीनों में अपना टार्गेट पूरा कर सकेगी। लेकिन सीरम को कोवोवैक्स नामक एक और वैक्सीन बनानी है, जिसका उत्पादन सितंबर से शुरू होना है। नोवोवैक्स नामक एक अमेरिकी कंपनी से हुए करार के हिसाब से उसे इसकी कुल 100 करोड़ खुराकें बनानी हैं। इनमें से 20 करोड़ उसे भारत को देनी हैं, वह भी दिसंबर 21 तक। क्या वह ऐसा कर पाएगी? अगर हां तो क्या उससे कोविशील्ड का उत्पादन प्रभावित होगा? वैसे नोवोवैक्स का फेज 3 ट्रायल अभी चल रहा है।

अब बात कोवैक्सीन की, जिसका टीकाकरण में केवल 10 प्रतिशत योगदान रहा है। अप्रैल में इसका उत्पादन 1 करोड़ वैक्सीन प्रति माह था। इसे बनाने वाली कंपनी भारत बायोटेक का लक्ष्य था कि मई–जून तक इसे दोगुना कर दिया जाए और सितंबर तक अपनी उत्पादन क्षमता 10 करोड़ प्रति माह तक ले जाए। ध्यान दीजिए, उसे साल के अंत तक 55 करोड़ वैक्सीन देनी हैं और उसके इस काम में चार और कंपनियां भी मदद कर रही हैं। अब अगर दूसरी लहर खत्म होती है और तीसरी लहर जल्द नहीं आती तो टीके से बचा एक बड़ा हिस्सा शायद टीके के प्रति रुचि न दिखाए, खासकर तब जब उसे निजी अस्पतालों में जाकर दो–ढाई हजार रुपये खर्च कर टीका लगवाना पड़े। भारत में भी यह झिझक दिखी है।

अष्टयोग- 5109

4	2		3	5	1	
2	32	4	39	7	34	4
	1		4		5	2
	30	3	38	6	31	
1	2		6		7	
3	27	2	25	1	31	
	6	1	4		3	5

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5108 का हल

7	6	1	4	2	3	5
2	28	4	33	7	35	4
1	2	5	6	4	7	3
5	28	3	38	6	34	1
4	2	6	3	5	1	7
3	31	2	31	1	30	6
6	1	7	4	3	5	2

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

उत्पादन और वितरण के बीच काफी लंबा गैप

मोहन। भारत बायोटेक नाक से दी जाने वाली एक वैक्सीन पर भी काम कर रही है, जिसके पहले फेज का ट्रायल हो चुका है। उसे 10 करोड़ वैक्सीन इस मद में भी देनी है। इसका काम कब शुरू होगा और कब ये वैक्सीन बाजार में आएगी, इसका कोई अंदाजा हम नहीं लगा सकते। कारण यह कि वैक्सीनों के उत्पादन और वितरण के बीच काफी लंबा गैप होता है। कभी–कभी तीन–चार महीनों तक का। इसलिए कोविशील्ड और कोवैक्सीन की उपलब्धता के बारे में हम जितने निश्चिंत हो सकते हैं, उतने उन वैक्सीनों के बारे में नहीं, जिनका अभी ट्रायल चल रहा है। सरकार जिन आठ टीकों पर भरोसा कर रही है, उनमें से चार टीके ऐसे हैं, जो अभी ट्रायल के दौर में हैं। दिसंबर 21 तक 18 साल से ऊपर सभी भारतीयों को टीका लगने में एक बाधा खुद जनता से आ सकती है। हम देख रहे हैं कि अमेरिका और चीन तक में कई लोग टीका लगवाने से बच रहे हैं।